सामायिक आवश्यक और सामायिक चारित्र के परिप्रेक्ष्य में आचार्यश्री विहर्ष सागरजी महाराज

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

महामंत्री - प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री - अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

समता ही शाश्वत सत्य है। जिसके जीवन में समता नहीं है, वह कभी भी अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर लेकर नहीं जा सकता है। आचार्यों ने समता को सर्वश्रेष्ठ कहा है। इसलिए जैनाचार्यों ने समता केलिए सामायिक शब्द का प्रयोग किया है। सामायिक शब्द, आवश्यकों में, चारित्र में, व्रत में और प्रतिमा में संलग्न हैं। प्रकारान्तर से भेद है परंतु चारों के लक्षण एक ही है। सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, इष्ट-अनिष्ट आदि विषमताओं में राग-द्वेष न करना बल्कि साक्षी भाव से उनका ज्ञाता दृष्टा बनते हुए समता स्वभावी आत्मा में स्थित रहना अथवा सर्व सावद्य योग से निवृत्ति सो सामायिक है। आवश्यक, चारित्र, व्रत व प्रतिमा चारों एक ही प्रकार के लक्षण हैं। अंतर केवल इतना है कि श्रावक उस सामायिक को नियत काल का नियत काल पर्यंत धारकर अभ्यास करता है और साधु का जीवन ही समतामय बन जाता है। श्रावक की उस सामायिक को व्रत या प्रतिमा कहते हैं और साधु की उस सार्वकालीन समता को सामायिक चारित्र कहते हैं।

सामायिक शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ - समेकीभावे वर्तते। तद्यथा संगतं घृतं संगत तैलमित्युच्यते एकीभूतमिति गम्यते। एकत्वेन अयनं गमनं समयः, समय एव सामायिकम् । समयः प्रयोजनमस्येति वा विगृह्य सामायिकम् ।[1]

=1. 'सम' उपसर्ग का अर्थ एक रूप है। जैसे घी संगत है, तैल संगत है', जब यह कहा जाता है तब संगत का अर्थ एकीभूत होता है। सामायिक में मूल शब्द 'समय' है जिसका अर्थ है एक साथ जानना व गमन करना अर्थात् आत्मा वह समय ही सामायिक है।

2. अथवा समय अर्थात् एकरूप हो जाना ही जिसका प्रयोजन है वह सामायिक है।[2]

आयंतीत्यायाः अनर्थाः सत्त्वव्यपरोपणहेतवः, संगताः आयाः समायाः, सम्यग्वा आयाः समायास्तेषु ते वा प्रयोजनमस्येति सामायिकमवस्थानम् ।[3]

आय अर्थात् अनर्थ अर्थात् प्राणियों की हिंसा के हेतुभूत परिणाम। उस आय या अनर्थ का सम्यक् प्रकार से नष्ट हो जाना सो समाय है। अथवा सम्यक् आय अर्थात् आत्मा के साथ एकीभूत होना सो समाय है। उस समाय में हो या वह समाय ही है प्रयोजन जिसका सो सामायिक है। तात्पर्य यह कि **हिंसादि अनर्थों से सतर्क रहना सामायिक है।**

सम्यगेकत्वेनायनं गमनं समयः स्वविषयेभ्यो विनिवृत्त्य कायवाङ्मनःकर्मणामात्मना सह वर्तनाद्रव्यार्थेनात्मनः एकत्वगमनमित्यर्थः। समय एव सामायिकं, समयः प्रयोजनमस्येति वा सामायिकम् ।[4]

अच्छी तरह प्राप्त होना अर्थात् एकांत रूप से आत्मा में तल्लीन हो जाना समय है। मन, वचन, काय की क्रियाओं का अपने-अपने विषय से हटकर आत्मा के साथ तल्लीन होने से द्रव्य तथा अर्थ

---

[1] सर्वार्थसिद्धि/7/21/360/7
[2] (राजवार्तिक/7/21/7/548/3); (गोम्मटसार कर्मकांड / जीवतत्त्व प्रदीपिका/547/713/18)
[3] राजवार्तिक/9/18/1/616/25
[4] चारित्रसार/19/1

दोनों से आत्मा के साथ एकरूप हो जाना ही समय का अभिप्राय है। समय को ही **सामायिक** कहते हैं। अथवा समय ही जिसका प्रयोजन है वह **सामायिक** है।

समम् एकत्वेन आत्मनि आयः आगमनं परद्रव्येभ्यो निवृत्त्य उपयोगस्य आत्मनि प्रवृत्तिः समायः, अयमहं ज्ञाता द्रष्टा चेति आत्मविषयोपयोग इत्यर्थः, आत्मनः एकस्यैव ज्ञेयज्ञायकत्वसंभवात् । अथवा सं समे रागद्वेषाभ्यामनुपहते मध्यस्थे आत्मनि आयः उपयोगस्य प्रवृत्तिः समायः स प्रयोजनमस्येति सामायिकं।[5]

1. 'सं' अर्थात् एकत्वपने से 'आय' अर्थात् आगमन। अर्थात् परद्रव्यों से निवृत्त होकर उपयोग की आत्मा में प्रवृत्ति होना। 'यह मैं ज्ञाता द्रष्टा हूँ' ऐसा आत्मा में जो उपयोग सो सामायिक है। एक ही आत्मा स्वयं ही ज्ञेय है और स्वयं ही ज्ञाता है, इसलिए अपने को ज्ञाता द्रष्टारूप अनुभव कर सकता है।

2. अथवा 'सम' का अर्थ राग-द्वेष रहित मध्यस्थ आत्मा है। उसमें आय अर्थात् उपयोग की प्रवृत्ति सो समाय है। वह समाय ही जिसका प्रयोजन है, उसे सामायिक कहते हैं।[6]

सामायिक शब्द का प्रयोग – सामायिक शब्द का प्रयोग चार स्थानों पर प्राप्त होता है –

1. दिगम्बर मुनिराज के 28 मूलगुणों में सात आवश्यक हैं, उनमें से पहला आवश्यक सामायिक है।
2. ग्यारह प्रतिमाओं में तीसरी प्रतिमा सामायिक प्रतिमा है।
3. पाँच प्रकार का चारित्र है, उसमें से एक सामायिक चारित्र है - सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय और यथाख्यात—ऐसे चारित्र पाँच प्रकार का है।[7]
4. शिक्षाव्रतों में भी सामायिक को सम्मिलित किया गया है।

   यहाँ हम चर्चा कर रहे हैं सामायिक आवश्यक और सामायिक चारित्र की।

---

[5] गोम्मटसार जीवकांड / जीवतत्त्व प्रदीपिका/367/789/10

[6] (अनगारधर्मामृत/8/19/742)

[7] सामायिकछेदोपस्थानापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातमिति चारित्रम् । तत्त्वार्थसूत्र/9/18